मेसी पर रहेगी विशेष नजर, लेकिन मैन-मार्किंग नहीं करेंगे : स्पेनिश कोच फुएंते

न्यूयार्क

फीफा विश्व कप 2026 के फाइनल से पहले स्पेन के मुख्य कोच लुइस डे ला फुएंते ने कहा है कि उनकी टीम अर्जेंटीना के कप्तान लियोनेल मेसी पर विशेष नजर रखेगी, लेकिन उन्हें रोकने के लिए मैन-मार्किंग की रणनीति नहीं अपनाई जाएगी। उन्होंने कहा कि अपने अनुभव से वह जानते हैं कि मेसी जैसे खिलाड़ी को पूरे मैच में एक खिलाड़ी के भरोसे रोकना लगभग असंभव है।

शुक्रवार को आयोजित प्रेस कान्फ्रेंस में डे ला फुएंते ने कहा, मेरा मेसी से पहला सामना तब हुआ था, जब मैं सेविला की युवा टीम का कोच था। हम बार्सिलोना खेलने गए थे और मैंने एक युवा खिलाड़ी मेसी के बारे में बहुत कुछ सुन रखा था।

उन्होंने आगे कहा, हमने एक खिलाड़ी को उनकी मैन-मार्किंग की जिम्मेदारी दी थी, लेकिन 70वें मिनट में मुझे उस खिलाड़ी को बदलना पड़ा क्योंकि उसे पीला कार्ड मिल चुका था। उस समय स्कोर 0-0 था, लेकिन अगले 15 मिनट में मेसी ने हमारे खिलाफ चार गोल कर दिए।

उन्होंने स्पष्ट किया, इसलिए इस बार हम मैन-मार्किंग नहीं करेंगे। हमें पूरे समय सतर्क रहना होगा और निश्चित रूप से मेसी पर विशेष ध्यान देना होगा।

39 वर्षीय मेसी की जमकर तारीफ करते हुए स्पेन के कोच ने कहा, मेसी अपने आप में अनोखे खिलाड़ी हैं। वह युवा खिलाड़ियों के लिए अपने व्यवहार और खेल भावना के कारण प्रेरणा हैं। खासकर जिस तरह का विश्व कप वह इस उम्र में खेल रहे हैं, वह वास्तव में शानदार है।

फाइनल में स्पेन के कोच का मुकाबला अर्जेंटीना के मुख्य कोच लियोनेल स्कालोनी से भी होगा। दोनों की दोस्ती वर्ष 2017 में हुई थी, जब स्कालोनी प्रोफेशनल कोचिंग लाइसेंस की पढ़ाई कर रहे थे और डे ला फुएंते उनके प्रशिक्षक थे।

अर्जेंटीना के खेल को लेकर पूछे गए सवाल पर डे ला फुएंते ने कहा, ओह, नहीं... बिल्कुल नहीं। मैं ऐसा कहने की कभी हिम्मत नहीं करूंगा। मुझे अर्जेंटीना की इस टीम के लिए बेहद सम्मान है।

उन्होंने कहा, उन्होंने विश्व कप जीता है, दो कोपा अमेरिका खिताब जीते हैं, फाइनलिसिमा जीती है और टीम की कमान मेरे करीबी मित्र स्कालोनी के हाथों में है। मेरे मन में उनके लिए सिर्फ सम्मान है, और सम्मान ही है।

उन्होंने आगे कहा, मेरा मानना है कि स्पेन और अर्जेंटीना दोनों ऐसी रणनीति के साथ मैदान में उतरेंगे, जहां प्रतिभा और बेहतरीन फुटबाल सबसे ऊपर होगी।

न्यूज ब्रीफ

पी. वी. सिंधु जापान ओपन 2026 के फाइनल में, चेन यूफेई चोट के कारण सेमीफाइनल से हटीं

टोक्यो। भारत की स्टार बैडमिंटन खिलाड़ी पी. वी. सिंधु ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जापान ओपन 2026 के फाइनल में प्रवेश कर लिया है। शनिवार को खेले गए सेमीफाइनल में चीन की विश्व नंबर-4 चेन यूफेई चोट के कारण मुकाबला बीच में ही छोड़ने पर मजबूर हो गई, जिससे सिंधु को विजेता घोषित किया गया। मुकाबले के दौरान सिंधु पहले गेम को 21-19 से जीत चुकी थीं और दूसरे गेम में 15-10 से आगे चल रही थीं। इसी दौरान चेन यूफेई हैमस्ट्रिंग की चोट से परेशान दिखीं और मैच से हटने का फैसला किया। पहले गेम में कड़ी टक्कर के बाद सिंधु ने बनाई बढ़तसिंधु ने मुकाबले की शुरुआत आक्रामक अंदाज में की और पहले गेम के मध्य तक चार अंकों की बढ़त बना ली। हालांकि, पूर्व ओलंपिक चैंपियन चेन यूफेई ने शानदार वापसी करते हुए स्कोर 19-19 से बराबर कर दिया। दबाव के बावजूद सिंधु ने संयम बनाए रखा और पहला गेम 21-19 से अपने नाम कर लिया। दूसरे गेम में सिंधु का दबदबादूसरे गेम में भी सिंधु ने शुरुआत से ही मैच पर नियंत्रण बनाए रखा। उन्होंने 15-10 की मजबूत बढ़त हासिल कर ली थी, तभी चेन यूफेई ने चोट के कारण मुकाबला छोड़ दिया और सिंधु फाइनल में पहुंच गईं। शानदार वापसी का सिलसिला जारी इस जीत के साथ 31 वर्षीय सिंधु का शानदार फार्म जारी है। वर्ष 2026 की शुरुआत उन्होंने विश्व रैंकिंग में 18वें स्थान से की थी, लेकिन लगातार अच्छे प्रदर्शन के दम पर वह शीर्ष-10 में वापसी करते हुए अब विश्व नंबर-9 बन चुकी हैं। फाइनल में किससे होगा मुकाबला जापान ओपन के खिताबी मुकाबले में सिंधु का सामना जापान की अकाने यामागुची और इंडोनेशिया की पुत्री कुसुमा वारदानी के बीच होने वाले दूसरे सेमीफाइनल की विजेता से होगा।

भारत में भी गेंदबाजों को सहायता देने वाली तेज पिचें बनायें : पुजारा

मुम्बई। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व टेस्ट विशेषज्ञ बल्लेबाज चेतेश्वर पुजारा ने कहा है कि देश में ऐसी पिचें बनायी जानी चाहिये जिससे गेंदबाजों को भी सहायता मिले। पुजारा के अनुसार इन पिचों पर खेलने से घरेलू गेंदबाजों को तो लाभ होगा ही बल्लेबाजों को भी तेज और उछाल भरी पिचों पर खेलने का अवसर मिलेगा। इससे वे विदेशी हालातों में बेहतर प्रदर्शन कर सकेंगे। पुजारा ने देश में तेज पिचों को बनाने का ये सुझाव इसलिए भी दिया है क्योंकि भारतीय टीम के बल्लेबाज विदेशी दौरों में तेज और उछाल भरी पिचों पर जूझते आये हैं। इंग्लैंड में भी यही देखने में आया है। तेज और उछाल भरी पिचों के कारण ही हाल ही में, भारतीय टीम को आयरलैंड जैसी कमजोर टीम के खिलाफ टी20 0-2 से हार मिली, जिसके बाद उसे इंग्लैंड के खिलाफ भी टी20 सीरीज में 0-4 की शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। इस पूरे दौरे में, भारतीय बल्लेबाजों को उछाल और गति का सामना करने में काफी परेशानी हुई, जिससे उनकी तकनीक और अनुकूलन क्षमता पर सवाल उठे। यह स्थिति और भी चिंताजनक इसलिए हो जाती है क्योंकि यही खिलाड़ी इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) में शानदार प्रदर्शन करते हैं, जहां पिचें अक्सर सपाट और बल्लेबाजी के अनुकूल होती हैं।

हर्षित और वरुण के बार-बार चोटिल होने से भारतीय टीम की मुश्किलें बढ़ीं : रिपोर्ट

मुम्बई। तेज गेंदबाज हर्षित राणा और स्पिनर वरुण चक्रवर्ती के बार-बार चोटिल होने से भारतीय टीम की मुश्किलें बढ़ गयी हैं। राणा अपने डेब्यू के बाद से ही फिट नहीं होने के कारण कई बार टीम से बाहर हुए हैं। पहले उनके घुटने की सर्जरी हुई थी। वहीं अब वह मांसपेशियों में खिंचाव (हैमस्ट्रिंग) के कारण टीम से बाहर हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार उनका इस प्रकार बार-बार चोटिल होना भारतीय टीम प्रबंधन और चयनकर्ताओं के लिए एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। वहीं कहा जा रहा है कि रिहैबिलिटेशन के दौरान बढ़े हुए वजन के कारण् उनकी फिटनेस प्रभावित हो रही है। हर्षित इंग्लैंड और आयरलैंड दौरे के लिए जब टीम के साथ जुड़े थे, तब उनका वजन सामान्य से अधिक पाया गया था। उन्होंने आयरलैंड के खिलाफ दो और इंग्लैंड के खिलाफ तीन टी20 मैच खेले पर पांच मैच के बाद ही उन्हें दाहिने पैर में ग्रेड-1 हैमस्ट्रिंग चोट के कारण बाहर होना पड़ा। इसी से टीम प्रबंधन की चिन्ता बढ़ा गयी है क्योंकि घुटने की सर्जरी, बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में रिहैब और रिटर्न टू प्ले प्रोटोकॉल पूरा करने के बाद भी राणा का वजन कैसे बढ़ गया ये किसी को समझ नहीं आ रहा है।

विश्व कप का फाइनल खेलना हमारा सपना इतिहास रचना चाहती है टीम : सलीमा टेटे

नई दिल्ली

भारतीय महिला हाकी टीम की कप्तान सलीमा टेटे ने कहा है कि एफआईएच महिला हाकी विश्व कप 2026 में टीम का लक्ष्य सिर्फ अच्छा प्रदर्शन करना नहीं, बल्कि फाइनल तक पहुंचकर इतिहास रचना है। उन्होंने कहा कि एफआईएच नेशंस कप का खिताब जीतने के बाद टीम का आत्मविश्वास काफी बढ़ा है और सभी खिलाड़ी दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों को चुनौती देने के लिए तैयार हैं।

15 से 30 अगस्त तक बेल्जियम और नीदरलैंड में आयोजित होने वाले महिला हाकी विश्व कप में भारत को पूल-डी में चीन, दक्षिण अफ्रीका और इंग्लैंड के साथ रखा गया है। भारत अपने अभियान की शुरुआत 16 अगस्त को चीन के खिलाफ करेगा।

पहली बार विश्व कप में कप्तानी करेंगी सलीमा

विश्व कप में पहली बार भारतीय टीम की कप्तानी करने जा रही सलीमा ने हाकी इंडिया को दिए एक साक्षात्कार में कहा, यह मेरे लिए बेहद खास एहसास है। मैं उत्साहित भी हूं और थोड़ी घबराहट भी है, क्योंकि हाकी का यह सबसे बड़ा टूर्नामेंट है और भारत की कप्तानी करना बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। हर खिलाड़ी विश्व कप खेलने का सपना देखता है और मुझे टीम की कप्तानी का मौका मिला है, जिससे यह और भी खास हो गया है।

उन्होंने आगे कहा, पिछले विश्व कप में हमने अच्छा हाकी खेला था, लेकिन नतीजे हमारे पक्ष में नहीं रहे। इस बार हम सभी फाइनल तक पहुंचने और उससे भी आगे जाने की बात कर रहे हैं। यही हमारा साझा सपना है। मेरी पहली जिम्मेदारी अच्छा प्रदर्शन करना है,

ताकि अपने खेल से टीम का नेतृत्व कर सकूं। साथ ही मैं खासकर युवा खिलाड़ियों की हर संभव मदद करना चाहती हूं।

टीम की सबसे बड़ी ताकत है आपसी संवाद

युवा और अनुभवी खिलाड़ियों के संतुलन पर सलीमा ने कहा, इस टीम की सबसे बड़ी ताकत आपसी संवाद है। युवा खिलाड़ी वरिष्ठ खिलाड़ियों से सलाह लेने में कभी संकोच नहीं करते और अनुभवी खिलाड़ी भी हमेशा उनका मार्गदर्शन करने के लिए तैयार रहते हैं।

उन्होंने कहा, मैं चाहती हूं कि हर खिलाड़ी खुलकर अपनी बात रखे। हमें एक-दूसरे को सुनना, सीखना और एकजुट रहना होगा। विश्व कप जैसे बड़े टूर्नामेंट में टीम के बीच मजबूत तालमेल बेहद जरूरी होता है। जब हम एक-दूसरे पर भरोसा करते हैं और अच्छी तरह संवाद करते हैं, तो दबाव का सामना करना आसान हो जाता है।

दबाव को चुनौती की तरह लेना होगा

विश्व कप की चुनौती पर सलीमा ने कहा, हर विश्व कप अलग होता है क्योंकि यहां दुनिया की सर्वश्रेष्ठ टीमों का सामना करना पड़ता है। हमारे पूल में भी मजबूत टीमें हैं और हर मैच में हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देना होगा।

उन्होंने कहा, हमारे लिए सबसे बड़ी चुनौती दबाव को बोझ नहीं, बल्कि सकारात्मक रूप से स्वीकार करना है। हमने अच्छी तैयारी की है। अब जरूरत खुद पर भरोसा रखने और अपनी रणनीति पर अमल करने की है। यदि हम मानसिक रूप से मजबूत रहे और एक-दूसरे का साथ दिया, तो हर चुनौती का सामना कर सकते हैं।

पहले मैच में चीन से भिड़ंत पर सलीमा ने कहा, हम इस चुनौती के लिए तैयार हैं। पिछली बार क्या हुआ था, यह अलग बात है। यह नया टूर्नामेंट है और हमारे पास खुद को साबित करने का नया मौका है।

उन्होंने कहा, मेरा संदेश टीम के लिए बिल्कुल स्पष्ट होगा—आत्मविश्वास और जुझारूपन के साथ खेलो। हमें विरोधी टीम के अनुसार अपना खेल नहीं बदलना है, बल्कि अपनी शैली में खेलते हुए उन्हें हमारे अनुसार खेलने के लिए मजबूर करना है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अंतिम सेकंड तक लड़ाई जारी रखनी है। यदि हम ऐसा कर पाए तो मनचाहा परिणाम हासिल कर सकते हैं।

युवा खिलाड़ियों को दिया खास संदेश

युवा खिलाड़ियों के लिए सलीमा ने कहा, मैंने उनसे कहा है कि अपनी मेहनत पर भरोसा रखें। उन्होंने अपनी प्रतिभा के दम पर टीम में जगह बनाई है, इसलिए विश्व कप का अतिरिक्त दबाव लेने की जरूरत नहीं है। खुलकर खेलें और खुद को अभिव्यक्त करें।

उन्होंने आगे कहा, गलतियां खेल का हिस्सा हैं। वरिष्ठ खिलाड़ी भी गलतियां करते हैं। सबसे जरूरी बात सही सोच, आत्मविश्वास और अपनी ताकत के अनुसार खेलना है। यदि वे इस मौके का आनंद लेंगे और खुद पर भरोसा रखेंगे, तो निश्चित रूप से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करेंगे।

देश के लिए खेलना सबसे बड़ी प्रेरणा

टीम की प्रेरणा पर सलीमा ने कहा, भारत का प्रतिनिधित्व करना ही हमारी सबसे बड़ी प्रेरणा है। जब भी हम भारतीय जर्सी पहनकर मैदान पर उतरते हैं, तो यह गर्व का क्षण होता है।

उन्होंने कहा, मैच से पहले हम हमेशा सकारात्मक माहौल बनाए रखने की कोशिश करते हैं और खुद को याद दिलाते हैं कि हम एक टीम हैं और हमें एक-दूसरे के लिए लड़ना है। हमारे कोच भी हमेशा यही कहते हैं कि खुद पर विश्वास रखो और वही हाकी खेलो, जो तुम जानते हो। उनका हम पर भरोसा ही हमें अपना सर्वश्रेष्ठ देने की प्रेरणा देता है। जब हम अपनी तैयारी पर भरोसा रखते हैं और एकजुट रहते हैं, तो हम किसी भी टीम को चुनौती दे सकते हैं।

फीफा विश्व कप फाइनल से पहले मेसी ने की यामल की तारीफ, कहा वह कुछ ऐतिहासिक कर सकता है

न्यूयार्क

फीफा विश्व कप 2026 के फाइनल से पहले अर्जेंटीना के महान फुटबालर लियोनेल मेसी ने स्पेन के युवा स्टार लामिन यामल की खुलकर सराहना की। मेसी ने कहा कि यामल एक असाधारण खिलाड़ी हैं और भविष्य में इतिहास रचने की क्षमता रखते हैं। हालांकि उन्होंने मुस्कुराते हुए यह भी कहा कि फाइनल में वह ऐसा नहीं होने देना चाहेंगे।

फाइनल की पूर्व संध्या पर फीफा ने न्यूयार्क के हडसन नदी के किनारे स्थित जैविट्स सेंटर में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। इस कार्यक्रम में मेसी, अर्जेंटीना के मुख्य कोच लियोनेल स्कालोनी, गोलकीपर एमिलियानो मार्टिनेज, स्पेन के मुख्य कोच लुइस डे ला फुएंते और कप्तान रोद्री ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन इंग्लैंड के पूर्व फुटबालर रियो फर्डिनेंड और हास्य कलाकार केविन हार्ट ने किया, जबकि टेनिस स्टार नोवाक जोकोविच, एनएफएल दिग्गज टाम ब्रैडी और एनबीए स्टार केविन ड्यूरेंट ने खिलाड़ियों से बातचीत की।

यामल को बताया शानदार खिलाड़ी

कार्यक्रम के दौरान टाम ब्रैडी ने वह चर्चित तस्वीर याद दिलाई, जिसमें 20 वर्षीय मेसी एक चैरिटी फोटोशूट के दौरान बच्चे लामिन

यामल को नहलाते हुए दिखाई दिए थे।

इस पर मेसी ने कहा, लामिन वास्तव में शानदार खिलाड़ी है। मैं उसे काफी समय से देख रहा हूं क्योंकि वह उस क्लब के लिए खेलता है, जिससे मुझे बेहद लगाव है। उसके पास इतिहास रचने का मौका है। हम कोशिश करेंगे कि इस बार ऐसा न हो।

उन्होंने मुस्कुराते हुए आगे कहा, हम अच्छा मुकाबला खेलना चाहेंगे, लेकिन उम्मीद है कि वह और उनकी टीम अच्छा प्रदर्शन न करें।

स्कालोनी ने की स्पेन के कोच की सराहना

कार्यक्रम के बाद अर्जेंटीना के मुख्य कोच लियोनेल स्कालोनी ने स्पेन के कोच लुइस डे ला फुएंते से मुलाकात कर उन्हें गले लगाया। बाद में स्कालोनी ने कहा, मैं यहां केवल लुइस की वजह से आया हूं। मैं उनका बहुत सम्मान करता हूं और उनकी प्रशंसा करता हूं।

विश्व कप फाइनल से पहले आयोजित इस कार्यक्रम में फुटबाल और अन्य खेलों की कई बड़ी हस्तियां एक मंच पर नजर आईं। वहीं, अर्जेंटीना की टीम लगातार दूसरी बार विश्व कप जीतने के लक्ष्य के साथ फाइनल में उतरेगी।

संगकारा और जयवर्धने के बीच हुई थी टेस्ट क्रिकेट की सबसे बड़ी साझेदारी

मुम्बई। आजकल सीमित ओवरों के क्रिकेट के प्रति लोग आकर्षित हो रहे हैं। पर इसके बाद भी टेस्ट क्रिकेट का रोमांच भूला नहीं जा सकता है। इसका कारण है कि लंबे प्रारुप में ही किसी खिलाड़ी की असली परीक्षा होती है। टेस्ट क्रिकेट में कई क्रिकेटरों ने एक से बढ़कर एक पारियां खेली है। इस दौरान बल्लेबाजों के बीच कई ऐतिहासिक साझेदारियां भी हुई हैं। ये साझेदारियां ऐसी रही जो रनों के साथ ही क्रीज पर खेल रहे दो बल्लेबाजों के धैर्य, दृढ़ संकल्प और आपसी तालमेल को बयां करती हैं। टेस्ट क्रिकेट में ऐसी ही कुछ ऐतिहासिक साझेदारियां हुई हैं। टेस्ट क्रिकेट के इतिहास की सबसे बड़ी साझेदारी का विश्व कीर्तिमान श्रीलंका के कुमार संगकारा और माहेला जयवर्धने के नाम दर्ज है और आज तक इसे कोई जोड़ी नहीं तोड़ पायी है। जुलाई 2006 में कोलंबो के सिंहली स्पोर्ट्स क्लब मैदान पर दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ उतरे इन दोनों दिग्गजों ने तीसरे विकेट के लिए रिकार्ड तोड़ 624 रन बना दिये। तब संगकारा ने 287 और कप्तान जयवर्धने ने 374 रनों की अविस्मरणीय पारी खेली, इससे डेल स्टेन और मखाया एनटिनी जैसे दिग्गज तेज गेंदबाजों भी बेबस नजर आये थे। यह साझेदारी आज भी अटूट है और श्रीलंका की ऐतिहासिक जीत की नींव बनी।

ट्रंप ने की मेसी, रोनाल्डो व केन की तारीफ, बोले महान खिलाड़ी कुछ अलग लेकर पैदा होते हैं

न्यूयार्क

फीफा विश्व कप 2026 के फाइनल से पहले अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अर्जेंटीना के स्टार फुटबालर लियोनेल मेसी, पुर्तगाल के दिग्गज क्रिस्टियानो रोनाल्डो और इंग्लैंड के कप्तान हैरी केन की जमकर सराहना की। उन्होंने कहा कि महान खिलाड़ी कुछ ऐसी विशेष प्रतिभा के साथ पैदा होते हैं, जो उन्हें दूसरों से अलग बनाती है।

स्पेन और अर्जेंटीना के बीच होने वाले विश्व कप फाइनल से पहले न्यूयार्क में शुक्रवार को आयोजित एक कार्यक्रम में ट्रंप ने कहा, हम सभी न्यूयार्क में इकट्ठा हुए हैं, क्योंकि रविवार को स्पेन और अर्जेंटीना जैसी दो शानदार टीमों के बीच फाइनल मुकाबला खेला जाएगा। मैंने सेमीफाइनल में मेसी का वह पास देखा। उन पर एक बेहतरीन खिलाड़ी की कड़ी निगरानी थी, फिर भी वह दाईं ओर बढ़े और उन्होंने जो पास दिया, वह लगभग पूरी तरह सटीक था। मैं कहूंगा कि वह केवल एक चौथाई इंच के अंतर से पूर्णता से चूका होगा। उसी ने मैच का रुख बदल दिया। वह वास्तव में शानदार था।

उन्होंने आगे कहा, महान खिलाड़ी बार-बार ऐसे ही कमाल करते हैं। वे कुछ अतिरिक्त प्रतिभा

लेकर पैदा होते हैं। रोनाल्डो भी उन्हीं में से एक हैं। मैं वर्षों से उन्हें जानता हूं और वह बेहतरीन इंसान हैं। ट्रंप ने इंग्लैंड के कप्तान हैरी केन की भी तारीफ करते हुए कहा, इंग्लैंड के पास हैरी केन जैसा शानदार खिलाड़ी है। मैंने उनके साथ गोल्फ भी खेला है। वह शानदार खिलाड़ी हैं। मुझे लगता है कि इंग्लैंड ने उन्हें रक्षात्मक भूमिका देकर गलती की। टीम बढ़त में थी, लेकिन उसने अपने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी को आगे की बजाय रक्षा में लगा दिया।

वेस्टइंडीज के मौजूदा कप्तानों ने सोबर्स को दी श्रद्धांजलि, कहा-उनकी विरासत पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी

नई दिल्ली

वेस्टइंडीज क्रिकेट के मौजूदा कप्तानों रोस्टन चेज (टेस्ट), शाई होप (टी20 और वनडे) और हेले मैथ्यूज (महिला टीम) ने महान क्रिकेटर सर गारफील्ड (सर गैरी) सोबर्स के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए कहा कि उनकी प्रतिभा, विनम्रता और खेल के प्रति समर्पण ने ऐसा मानदंड स्थापित किया है, जो आने वाली पीढ़ियों के खिलाड़ियों को हमेशा प्रेरित करता रहेगा।

क्रिकेट वेस्टइंडीज द्वारा इंस्टाग्राम पर साझा किए गए संयुक्त बयान में कप्तानों ने कहा, वेस्टइंडीज क्रिकेट की कप्तानी करते हुए हम उस जिम्मेदारी को समझते हैं, जो उन महान खिलाड़ियों की विरासत को आगे बढ़ाने के साथ आती है जिन्होंने इस गौरवशाली इतिहास की नींव रखी। सर गैरी की प्रतिभा, उनकी विनम्रता और खेल के प्रति समर्पण ने ऐसा मानक स्थापित किया है, जो हर नई पीढ़ी का मार्गदर्शन करता रहेगा।

उन्होंने आगे कहा, हम उनके परिवार और

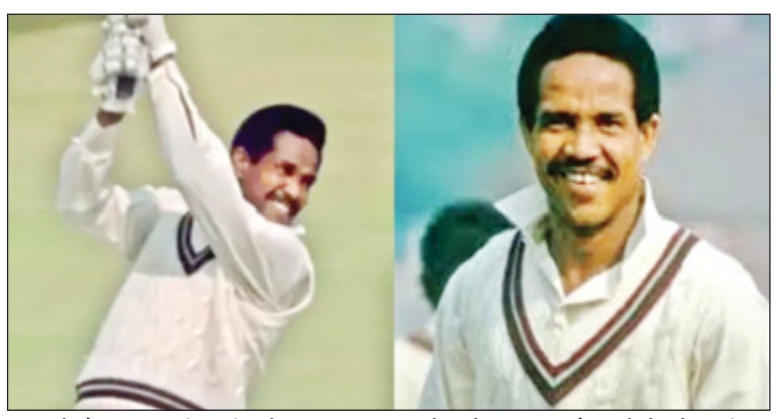

प्रियजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदनाएं व्यक्त करते हैं। हम ऐसे महान व्यक्तित्व के जीवन का सम्मान करते हैं, जिन्होंने सीमाओं से परे जाकर अपनी पहचान बनाई। उनकी विरासत क्रिकेट के इतिहास, कैरेबियाई भावना और इस खेल से प्रेम करने वाले हर व्यक्ति के दिलों में हमेशा जीवित रहेगी।

क्रिकेट वेस्टइंडीज ने वीडियो से दी श्रद्धांजलि - क्रिकेट वेस्टइंडीज ने एक अन्य इंस्टाग्राम पोस्ट में सर गारफील्ड सोबर्स को श्रद्धांजलि देते हुए एक भावुक वीडियो साझा किया। पोस्ट के साथ लिखा गया, उस महान खिलाड़ी को श्रद्धांजलि, जिसने हम सभी को प्रेरित किया। शांति से विश्राम करें, सर गैरी।

89 वर्ष की आयु में हुआ निधन - वेस्टइंडीज के महानतम खिलाड़ियों में शुमार सर गारफील्ड सोबर्स का 17 जुलाई 2026 को 89 वर्ष की आयु में बारबाडोस के सेंट माइकल स्थित उनके आवास पर निधन हो गया। उनके बेटे डैनियल सोबर्स के अनुसार, उन्होंने शांतिपूर्वक अंतिम सांस ली। वह पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे और सांस लेने में तकलीफ बढ़ने के कारण उन्हें आक्सीजन सपोर्ट पर रखा गया था।

क्रिकेट इतिहास के महानतम आलराउंडरों में शामिल - सर गारफील्ड सोबर्स ने 1954 से 1974 के बीच वेस्टइंडीज के लिए 93 टेस्ट मैच खेले। इस दौरान उन्होंने 57.78 की औसत से 8,032 रन बनाए, जिसमें 26 शतक शामिल हैं। गेंदबाजी में उन्होंने 235 विकेट भी हासिल किए। 1958 में पाकिस्तान के खिलाफ खेली गई उनकी नाबाद 365 रन की पारी उस समय टेस्ट क्रिकेट का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर थी, जो 36 वर्षों तक विश्व रिकार्ड रहा। वर्ष 1968 में उन्होंने नाटिंघमशायर की ओर से खेलते हुए ग्लैमार्गन के मैल्कम नैश के एक ओवर में लगातार छह छक्के लगाकर प्रथम श्रेणी क्रिकेट में यह उपलब्धि हासिल करने वाले पहले बल्लेबाज बनने का गौरव भी प्राप्त किया। क्रिकेट में उनके अतुलनीय योगदान के लिए वर्ष 1975 में महारानी एलिजाबेथ द्वितीय ने उन्हें नाइटहुड से सम्मानित किया। वर्ष 2000 में उन्हें विजडन ने 20वीं सदी के पांच महानतम क्रिकेटरों में शामिल किया। वहीं, अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) द्वारा वर्ष के सर्वश्रेष्ठ पुरुष क्रिकेटर को दिया जाने वाला प्रतिष्ठित सर गारफील्ड सोबर्स ट्राफी पुरस्कार भी उनकी महान विरासत का प्रतीक है। सर गारफील्ड सोबर्स के निधन के बाद दुनिया भर के क्रिकेटरों और खेल जगत की हस्तियां उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित कर रही हैं।